

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्री कमल नेत्र स्तोत्र



शां(न)ताकारं(म्) भुजगशयनं(म्) पद्मनाभं (म्) सुरेशम्
विश्वाधारं(ङ्) गगनसदृशं(म्) मेघवर्णं(म्) शुभां(ङ्)गम् ।
लक्ष्मीकां(न्)तं(ङ्) कमलनयनं(म्), योगिहृद्धानगम्यम्
वन्दे विष्णुं(म्) भवभयहरं(म्), सर्वलोकैकनाथम् ॥

कृष्णाय वासुदेवाय, देवकीनन्दनाय च ।

नन्दगोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः ॥

नमः(फ्) पङ्कजनाभाय ,नमः(फ्) पङ्कजमालिने ।

नमः(फ्) पङ्कजनेत्राय नमस्ते पङ्कजाङ्घ्रये ॥

श्री कमलनेत्र कटि पीताम्बर, अधर मुरली गिरधरम् ।

मुकुट कुण्डल कर लकुटिया, सां(वँ)वरे राधे वरम् ॥ 1 ॥

कूल यमुना धेनु आगे, सकल गोपी मन हरम् ।

पीत वस्त्र गरुड़ वाहन, चरण सुख नित सागरम् ॥ 2 ॥

करत कोलि किलोल निशदिन, कुं(ञ)ज भवन उजागरम् ।
अजर अमर अडोल निश्चल, पुरुषोत्तम अपरा परम् ॥ 3 ॥

दीनानाथ दयालु गिरिधर, कं(म्)स हिरणाकुश हरम् ।
गल फूल भाल विशाल लोचन, अतीव सुन्दर केशवम् ॥ 4 ॥

बंशीधर वसुदेव छैया, बलि छल्यो श्री वामनम् ।
जल में गज को तार दीनो, लं(ङ्)क छेद्यो रावणम् ॥ 5 ॥

सप्त द्वीप नवखण्ड चौदह, भुवन कीनो एक पदम् ।
द्रौपदी की लाज राखी, कहां(लँ) लौ उपमा करम् ॥ 6 ॥

दीनानाथ दयालु पूरण, करुणामय करुणाकरम् ।
कविदत्त दास विलास निशदिन, नाम जप नित नागरम् ॥ 7 ॥

प्रथम गुरु के चरण वन्दौं(यँ), यस्य ज्ञान प्रकाशितम् ।
आदि विष्णु जुगादि ब्रह्मा, सेविते शिव शं(ङ्)करम् ॥ 8 ॥

श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव, कृष्ण यदुपति केशवम् ।
श्रीराम रघुवर, राम रघुवर, राम रघुवर राघवम् ॥ 9 ॥

श्रीराम कृष्ण गोविन्द माधव, वासुदेव श्री वामनम् ।
मच्छ-कच्छ वाराह नरसिं(म्)ह, पाहि रघुपति पावनम् ॥ 10 ॥

मथुरा केशवराय विराजे, गोकुल बाल मुकुन्द जी ।
श्री वृन्दावन में मदन मोहन, गोपीनाथ गोविन्द जी ॥ 11 ॥

धन्य मथुरा धन्य गोकुल, जहां(म्) श्री पति अवतरे ।
धन्य यमुना नीर निर्मल, ग्वाल बाल सखा वरे ॥ 12 ॥

नवनीत रसिया को जपे निरन्तर, शिव विरं(ञ्)चि मन मोहितम् ।
कालिन्दी तट करत क्रीडा, बाल अद्भुत सुन्दरम् ॥ 13 ॥

ग्वाल बाल सब सखा विराजे, सं(ङ्)ग राधे भामिनी ।
बंशी वट तट निकट यमुना, मुरली टेर सुहावनी ॥ 14 ॥

रघुवंश उत्तम राघवेश हैं, परम राजकुमार जी ।
सीता के पति ,भक्त की गति, जगत प्राण आधार जी ॥ 15 ॥

जनक राजा परन राखी, धनुष बाण चढ़ावै जो ।
सती सीता नाम जाके, राम जी परणार्ई वो ॥ 16 ॥

जन्म मथुरा खेल गोकुल, नन्द के हृदि नन्दनम् ।
बाल लीला पतित पावन, देवकी वसुदेवकम् ॥ 17 ॥

श्री कृष्ण कलिमल हरण जाके, जो भजे हरिचरण को ।
भक्ति अपनी दे दो माधव, भवसागर से तरण को ॥ 18 ॥

जगन्नाथ जगदीश स्वामी, बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।
द्वारिका के नाथ श्री पति, केशवं(म्) प्रणमाम्यहम् ॥ 19 ॥